~~[illegible]~~ पेपर - 1

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - भाग 3 के विद्यार्थियों के लिए

दिनांक - 24-11-20

विषय : - भाषा विज्ञान

पाठ - भाषा की परिभाषा एवं उसकी विशेषताएं

छात्र - छात्राओं !

भाषा का अस्तित्व मनुष्य के उद्भव काल से ही शुरू हो गया था चाहे वह व्यवस्थित तथा व्याकरण सम्मत न हो। चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिए समाज में रहने के चलते उसका अस्तित्व अपनी आवश्यकताओं के कारण तथा विचार विनिमय के कारण समाज के अन्य प्राणियों से भी जुड़ा हुआ रहा है। प्रारम्भ में मनुष्य कभी शब्दों और छोटे-छोटे वाक्य पदों द्वारा अपने को अभिव्यक्त करता था तो कभी सिर हिलाके या अन्य अंग संचालन द्वारा इशारों से भी उसका काम चल जाता था। इस रूप में अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा विभिन्न रूपों में इतनी व्यापक हो गई थी कि किसी एक परिभाषा में सिमट कर रहना संभव नहीं हो सका। जैसे समाज का पढ़ा लिखा वर्ग कुछ लिखकर निमंत्रण किसी को देता है तो अनपढ़ देहाती हल्दी, सुपारी देकर किसी को आमंत्रित करते हैं। चोरों की भाषा अंधेरे में हाथ दबाकर या अन्य संकेतों के माध्यम से व्यक्त होती है। कभी-कभी तो वस्तुओं के उपयोग में अन्तर द्वारा भी अपनी अभिव्यक्ति अलग-अलग ढंग से की जाती है। जैसे पूर्व में निश्चित हो जाने कि अथवा काम करने की जानकारी देने के लिए संकेत की भाषा से अलग समाज में रहते हुए भी केवल वस्तुओं के उपयोग से अभिव्यक्ति हो जाती है। जैसे किसी के आने पर शर्बत लाइए कहा जाय तो वह उपस्थित परिवार का व्यक्ति समझ जाता है कि चीनी का शर्बत लाना है। दूसरे, रस लाने को कहा जाय तो वह समझ जाता है कि गुड़ का रस लाना है। कुल मिलाकर हमारी जितनी ज्ञानेन्द्रियाँ हैं लगभग सभी का उपयोग कर व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति देता है। आँखों की भंगिमा से तो इतनी विविधता में अभिव्यक्ति की जाती है कि शब्द और वाक्य उनके सामने फीके पड़ जाते हैं। किन्तु भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते, विचारते तथा अपने को अभिव्यक्त करते हैं।

भाषा की परिभाषा अनेक तरह से की गयी है —

1. 'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है — 'बोलना' या 'कहना'। अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाय।

2. प्लेटो ने 'सोफिस्ट' में विचार और भाषा के संबंध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा अन्तर है। 'विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।'

3. स्वीट कहते हैं 'ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना भाषा है।'

4. वेंद्रिय के अनुसार - 'भाषा एक तरह का संकेत है। संकेत से आशय उन प्रतीकों से है जिनके द्वारा मानव अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है। ये प्रतीक कई प्रकार के होते हैं, जैसे - नेत्रग्राह्य, कर्णग्राह्य और स्पर्श ग्राह्य। वस्तुतः कर्णग्राह्य प्रतीक ही सर्वश्रेष्ठ है।'

5. ब्लाक तथा ट्रेगर के शब्दों में - A Language is a System of arbitrary vocal Symbols by means of which a Society group cooperatus.

उपर्युक्त परिभाषाओं पर विचार करने और एक दूसरे के अन्तर्संबंधों पर ध्यान देने पर इतनी बात तो स्पष्ट हो जाती है कि भाषा बोलनेवाले के विचारों को सुननेवालों तक पहुंचाती है अर्थात यदि सुननेवाला भी अपने विचारों को बोलनेवाले से साझा करता है वह भाषा विचार विनिमय का साधन होती है। दूसरे, भाषा में जो मनुष्य की अलग-अलग तरह की भी ध्वनियाँ होती हैं उच्चारण और बनावट के फलस्वरूप वे सभी ध्वनियाँ सार्थक ही होती हैं। ~~कभी~~ जबकि ताली बजाने, चुटकी बजाने से जो ध्वनियाँ निकलती है वे विचार विनिमय की तो हो सकती हैं पर उसे भाषा की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। भाषा में जैसा कि ब्लॉक ट्रेगर की परिभाषा में आभास आती है - यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीक होता है जिसे (Arbitrary vocal Symbols) कहा गया है, महत्वपूर्ण है।

भोलानाथ तिवारी ने अपने भाषाविज्ञान वाली पुस्तक में भाषा की परिभाषा इस रूप में दी है — "भाषा मानव-उच्चारणावयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार-विनिमय करते हैं, लेखक, कवि या वक्ता रूप में अपने अनुभवों एवं भावों आदि को व्यक्त करते हैं तथा अपने वैयक्तिक और सामाजिक व्यक्तित्व, विशिष्टता तथा अस्मिता (identity)

निवांत

के संबंध में जाने - अनजाने जानकारी देते हैं।"

तिवारी जी की परिभाषा भाषा की थोड़ी व्यापकता को भी अपने में समेटे हुए है। वैयक्तिकता, सामाजिकता, विशिष्टता और आसिता के साथ इन्होंने जो 'संरचनात्मक व्यवस्था' की बात की है वह भाषा की व्यापकता की ओर तो इंगित करती है पर इन सभी का सम्बन्ध मानव से ही है। पर मानव मौन रहकर भी अपनी भावनाओं को प्रकट करता है।

मैं समझता हूँ कि हमारी भाषा का सम्बन्ध मनुष्येतर प्राणियों से भी सीधा जुड़ा हुआ है इसलिए और व्यापक रूप में इसे देखने की आवश्यकता है।

अगले पत्रों में इस पर चर्चा की जायेगी एवं भाषा की विशेषताओं पर भी बात की जायेगी।

रमेश शर्मा, हिन्दी विभाग
एस.एस. कॉलेज, जहानाबाद।

मे॰शर्मा॰डा

ramesh.ss.college@gmail.com

24.4.20